ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 46 कुल पृष्ठ-8 13 से 19 जनवरी, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 पौ.शु.-12

गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ (पाईकमाल), जिला–बरगढ़ (उड़ीसा) में उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार का भव्य आयोजन सम्पन्न

गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों एवं कन्या गुरुकुल, देवनगर, घुचापाली, बरगढ़ (उड़ीसा) की ब्रह्मचारिणियों को मानव सेवा प्रतिष्ठान की ओर से गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किये गये

गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन

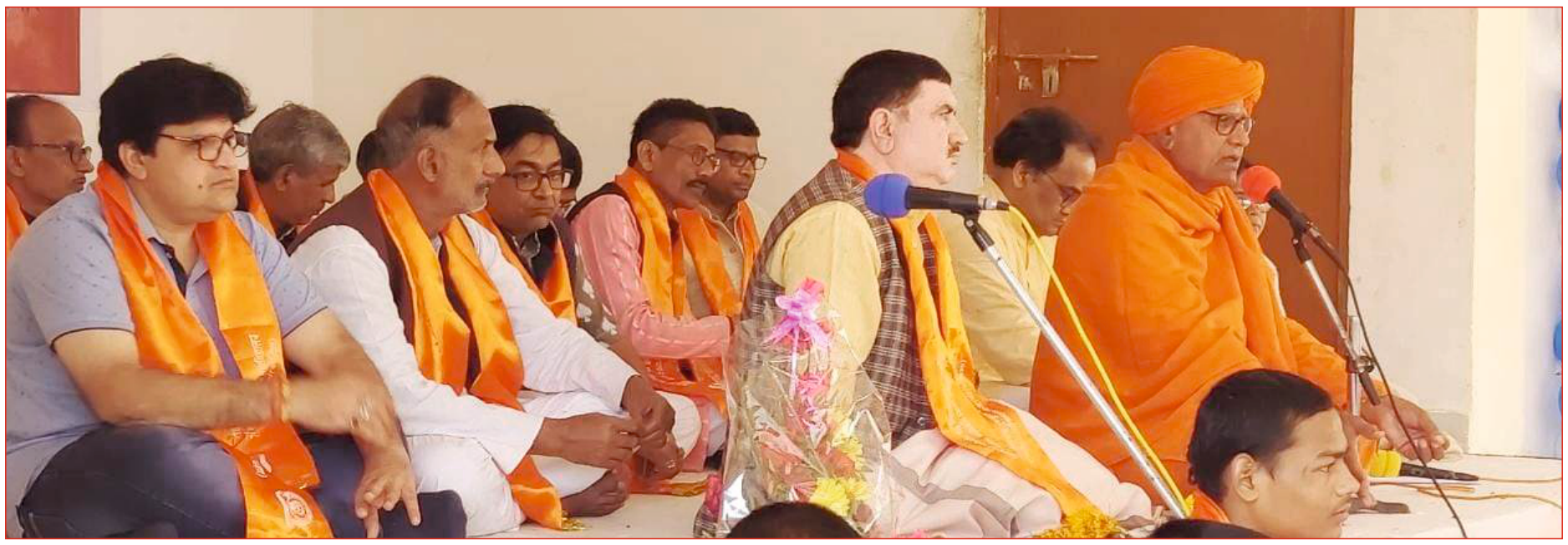

गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ (पाईकमाल), जिला–बरगढ़ (उड़ीसा) का वार्षिककोत्सव समारोह 1 व 2 जनवरी, 2022 को बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नये ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार भी किया गया। समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा पद को दिल्ली से पधारे युवा विद्वान् श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी ने संभाला तथा श्री नारायण शास्त्री व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। समारोह में सम्मिलित होने के लिए इस गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी, सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, श्री आलोक शास्त्री राजस्थान, श्री देवराज शास्त्री एवं श्री सुभाष शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री चन्द्रदेव शास्त्री, कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी, एवं उपाध्यक्ष श्री सोमदेव शास्त्री, महाशय सुल्तान सिंह आर्य आदि दिल्ली से पधारे। इनके अतिरिक्त गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी, गुरुकुल कोसरंगी, छत्तीसगढ़ के आचार्य कोमल कुमार जी, गुरुकुल तुरंगा, रायगढ़ के आचार्य श्री राकेश जी, गुरुकुल आमसेना से ब्र. मनुदेव जी, नव–प्रभात गुरुकुल के आचार्य बृहस्पति जी, कन्या गुरुकुल घुचापाली की आचार्या शारदा जी एवं अधिष्ठाता श्री अनन्त शास्त्री आदि विद्वान भी उत्सव में सम्मिलित हुए।

1 जनवरी, 2022 को प्रातः 9 से 11 बजे तक नये ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार आचार्य बृहस्पति जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। संस्कार विधि में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट विधि के अनुसार ये दोनों संस्कार किये गये। जो उपस्थित जनसमूह के लिए एक आकर्षण का विषय रहा। इस वेदारम्भ संस्कार के उपरान्त सभी उपस्थित संन्यासियों एवं विद्वानों ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गर्भाधान से लेकर वेदारम्भ संस्कार तक बच्चे के 11 संस्कार हो जाते हैं। वेदारम्भ संस्कार 8 वर्ष की उम्र में किया जाता है। अतः इससे ज्ञात होता है कि 8 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस उम्र तक बच्चे के मन–मस्तिष्क पर जो संस्कार डाल दिये जाते हैं वे उसे जीवनभर प्रेरित करते रहते हैं। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान समय में जब पाश्चात्य संस्कृति एवं लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली का प्रभाव अपने चरम पर है, ऐसे समय में संस्कारों का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक बताया। उन्होंने प्रसिद्ध युवा विद्वान् और गुरुकुल नरसिंहनाथ तथा कन्या गुरुकुल घुचापाली के मुख्य स्तम्भ व संचालक आचार्य नरदेव यजुर्वेदी जी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की प्रेरणा से उनके ही सुयोग्य स्नातक आचार्य नरदेव जी जिस कुशलता एवं कर्मठता के साथ इन दोनों गुरुकुलों को चला रहे हैं इससे उनकी गुरुकुल शिक्षा के प्रति निष्ठा का परिचय मिलता है।

अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी ने नव ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि ये ब्रह्मचारी अपने माता–पिता के कुल से आकर अब गुरु के कुल में दाखिल हो गये हैं। अब इनका पूरा दायित्व यहाँ के आचार्य संभालेंगे। स्वामी प्रणवानन्द जी ने गुरुकुल के सहयोग के लिए उपस्थित लोगों का आह्वान किया और कहा कि वे गुरुकुलों को दान देकर भारतीय संस्कृति के सहायक बनें।

इस अवसर पर आचार्य नरदेव यजुर्वेदी जी ने भी आगन्तुक अतिथियों

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

23 जनवरी, (जयन्ती) पर पावन स्मरण

सुभाषचन्द्र बोस के जीवन के प्रेरक एवं रोमांचक प्रसंग

– बद्रीनारायण तिवारी

सन् 1947 ई. के पूर्व भारत दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। इसे आजाद कराने में देशवासियों को न केवल भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा बल्कि बेशुमार कुर्बानियाँ भी देनी पड़ी। स्वतंत्रता संघर्ष के दरम्यान जिन योद्धाओं ने अपने सर्वस्व को न्यौछावर कर, उसे सफल बनाने में समर्पित मानव का परिचय दिया। उसमें मुख्य रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक, तात्या टोपे, राजेन्द्र प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उन्हीं सेनानियों के बीच जवानी, उत्साह, उमंग एवं स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति महान् देशभक्त ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' के क्रांतिकारी उद्घोषक और 'आजाद हिन्द फौज' के संस्थापक सुभाष चन्द्र बोस' का नाम कौन नहीं जानता। जिन्होंने देश आजाद बनाने के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिये।

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म बंगाल के चौबीस परगना जिले के कड़ोलिया नामक ग्राम में 23 जनवरी, 1897 ई. को हुआ था। उनके पिता जानकीनाथ बोस थे। कटक (उड़ीसा) के मिशनरी स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज से एफ.ए. की परीक्षा पास की। सुभाष चन्द्र बोस ने 1919 ई. में स्काटिश चर्च कालेज से बी.ए. की परीक्षा में दर्शनशास्त्र में विश्वविद्यालय भर में सर्वप्रथम हुए। इंग्लैण्ड में आई.सी.एस. परीक्षा में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान और नीति शास्त्र का ट्राइपास कोर्स लेकर ग्रेजुएट भी हुए।

प्रेसीडेन्सी कॉलेज के छात्रावास में जो घटना घटित हुई थी, उससे सुभाष की क्रांतिकारी विचारधारा का परिचय मिलता है। जब वे प्रेसीडेन्सी कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उसी क्रम में मि. वोटन नामक एक दुष्ट गोरा महाविद्यालय में प्राध्यापक था। भारतीय छात्रों के प्रति उसका अत्यधिक अपमानजनक दुर्व्यवहार देखकर सुभाष को गहरा आघात लगा। सुभाष वेदना को दबा नहीं सके और आवेश में आकर उन्होंने उस प्राध्यापक को पीट दिया। इसी सम्बन्ध में महाविद्यालय के छात्रों के द्वारा एक बड़ी हड़ताल की गई। परिणामस्वरूप सुभाष दो वर्षों तक विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये।

सुभाष चन्द्र बोस में बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिक जिज्ञासा थी। उसी की प्रेरणा से वे एक दिन अपने परिवार के माता–पिता के मोह–बन्धन को तोड़कर घर से भाग निकले। लगभग छह मास तक वे वृन्दावन, काशी, हरिद्वार आदि तीर्थों, मंदिरों, मठों में भी भ्रमण करते रहे। वे सच्चे गुरु के अन्वेषण में निकले थे। परन्तु तीर्थ स्थलों के साधु, संन्यासियों का जीवन बड़ा विलासमय दिखाई पड़ा, जिससे उन्हें घृणा हो गई और वे घर लौट कर चले आये।

सुभाष में अद्भुत संगठन क्षमता थी। उनकी वाणी में एक आकर्षण था, जो जनता को मोह लेता था। बंगाल का सत्याग्रह आन्दोलन उन्होंने ही किया था, जिसने अधिक जोर पकड़ लिया। 1920 ई. में उन्होंने युवक दल का संगठन किया। जिसके द्वारा कृषकों तथा श्रमिकों का संगठन बनाया था। सन् 1921 ई. में जब अंग्रेजों के द्वारा रौलेट बिल, पंजाब, हत्याकाण्ड, मार्शल लॉ आदि के विरुद्ध देशभर में आन्दोलन चलाया जा रहा था। असहयोग आन्दोलन भी जारी था। स्वतन्त्रता संघर्ष का मध्य संक्रमण काल था। सुभाष बाबू संवेदनशील हृदय के व्यक्ति थे। अंग्रेजों के द्वारा भारतवासियों पर अत्याचार को देखकर वे काफी मर्माहत हो गये और आई.सी.एस. का पद त्याग कर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। फलतः गिरफ्तार कर लिये गये।

1924 ई. में कलकत्ता निगम के निर्विरोध मेयर निर्वाचित हुए; किन्तु साल के भीतर ही बंगाल शासन के अध्यादेश के अनुसार उन्हें निश्चित काल के लिए कारावास का दण्ड दिया गया। पहले तो उन्हें कलकत्ते के अलीपुर जेल में रखा गया। पुनः बर्मा की मांडले जेल में नजरबन्द कर दिया गया। वहाँ उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। उन्होंने कारागृह में दुर्गा का त्योहार मनाने के लिए अनशन भी किया। अब उनके शरीर में क्षय के लक्षण प्रकट होने लगे। उन्हें स्विट्जरलैण्ड में जाकर स्वास्थ्य सुधारने की अनुमति दी गई पर शर्त लगा दी गई थी कि बर्मा से वे सीधे चले जायें।

रास्ते में भारत के किसी बन्दरगाह पर न उतरें। उन्होंने इस शर्त को अस्वीकार कर दिया। अन्त में अंग्रेजों के द्वारा बिना शर्त उन्हें छोड़ दिया गया। जेल से छूटने पर वे शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

वे प्रान्त की कांग्रेस समिति के अध्यक्ष चुने गये और 1927 में प्रान्तीय कॉन्सिल में भी निर्वाचित हुए उन्होंने 'इंडिपेन्डेन्स ऑफ इण्डिया लीग' नाम का संगठन बनाया 'साइमन आयोग' के बहिष्कार में भी योगदान दिया। 1928 के कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक सेना के प्रधान सेनानी बने। उन्होंने कांग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टी भी कायम की। पुनः उन पर राजद्रोह का झूठा मुकदमा चलाकर साल भर के लिए जेल भेज दिया गया; किन्तु स्वास्थ्य के बिगड़ने पर इलाज के लिए वियाना भेज दिया गया। स्वास्थ्य के कुछ सुधरने पर उन्होंने बुडापेस्ट, मिलान आदि देशों में घूमकर प्रचार किया। लेकिन पीछे सरकार की अनुमति के बिना ही स्वदेश लौट आये। यहाँ आते ही उन्हें जेल में डाल दिया गया। किन्तु पुनः स्वास्थ्य के बिगड़ने पर उन्हें बिना शर्त 1937 में छोड़ दिया गया।

हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में मतभेद होने के कारण सभापति के पद से त्यागपत्र देकर कांग्रेस के भीतर ही 'अग्रगामी दल' की स्थापना की। 1940 में रामगढ़ के कांग्रेस अधिवेशन में विशेष भाग लिया। पुनः बन्दी बनाये गये। पुनः अनशन किया। स्वास्थ्य के बिगड़ने पर उन्हें छोड़ दिया गया। किन्तु उनके मकान पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अब वे एकान्तवास तथा ईश्वराधना में तल्लीन हो गये। इसी बीच हिटलर के नेतृत्व में द्वितीय महासमर शुरू हुआ।

26 जनवरी, 1941 को पुलिस को चकमा देकर भारत से पेशावर होते हुए वे काबुल पहुँच गये। पुनः काबुल के जर्मन दूतावास की सहायता से बर्लिन पहुँच कर हिटलर से मिले। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस श्री चितरंजन दास को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। उस समय बंगल के नेता देशबन्धु चितरंजनदास जी ही थे। सुभाष चन्द्र बोस ने श्री रासबिहारी बोस की अध्यक्षता में 'आजाद हिन्द सेना' का गठन किया।

1943 के मध्य वे जर्मनी से जापान पहुँचे। सुदूर पूर्व में बसने वाले भारतीयों को सुसंगठित कर अंग्रेजों और अमेरिकियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और बर्मा की ओर से भारत के पूर्वी सीमान्त पर आक्रमण कर दिया। इस सेना में रानी लक्ष्मीबाई के नाम से भारतीय वीरांगनाओं की भी सेना थी। उस रण–कुशल वीर का सैनिक संगठन अपूर्व था। इसमें लगभग 50 हजार सशस्त्र सैनिकों की एक सुसंगठित पलटन थी। उस सेना के सैनिक गोलों की बौछारें करते हुए शत्रुओं के टैंकों के मार्ग में लेटते हुए तनिक भी भयभीत नहीं होते थे। इस मोर्चे के सम्मुख अंग्रेजी सैनिकों के प्राण सूख गये और भारतीयों का हौसला बुलन्द हो गया। किन्तु कालचक्र उलटा चला। जर्मनी पराजित हो गया तथा अमेरिका के अणु बम से जापानियों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। इसी बीच सुभाष चन्द्र बोस भी अन्तर्ध्यान हो गये।

सुभाष चन्द्र बोस जितने बड़े देशभक्त थे, उतने ही बड़े पितृभक्त थे। वे इण्टर की परीक्षा दिये बिना आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। जिसके कारण इनके पिता जी नाराज रहने लगे थे। एक दिन इनकी माता जी ने इनसे कहा – ''तुम्हारे पिता जी तुम्हारे व्यवहार से तुम पर क्षुब्ध रहते हैं सुभाष। पढ़ना–लिखना छोड़कर नेतागिरी करते फिरते हो! जिसके कारण उनके हृदय में तुम्हारे प्रति आक्रोश होना उचित भी है।'' यह संवाद सुनते ही उनका हृदय अपने पिता के प्रति न सिर्फ श्रद्धा और भक्तिभाव से भर गया, बल्कि उनसे मिलने की जिज्ञासा भी जग गई।

एक दिन सुभाष अपने पिता को अकेले में बैठे देखकर उनके निकट चले गये और साष्टांग प्रणाम प्रस्तुत कर अपने प्रति नाराजगी का कारण जानना चाहा। इस पर उनके पिता जी ने डांट लगाते उनसे कहा – ''तुम इस बात को नहीं जान पाओगे सुभाष! कि पुत्र के जन्म काल के समय पिता को कितनी खुशी होती है और उसके प्रति वह क्या–क्या अरमान सजा लेता है। मैंने भी तुम्हारे जन्म के समय कुछ अरमान संजोये थे, जो सब मिट गये और पुत्र भी कुपुत्र निकल गया। ऐसे में उस दुःखी पिता के मन में उस पुत्र के प्रति आक्रोश के सिवाय और क्या हो सकता है?''

तब सुभाष ने बहुत विनम्रतापूर्वक उनकी बात जानने की जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहा – ''कौन–कौन से अरमान मेरे जन्मकाल में संजोये थे पिता जी! मुझे बताने की कृपा करें, मैं उसे पूरा करने का पुरजोर प्रयास करूँगा। अब तुम लीक से हट गये हो सुभाष! नेतागिरी में तुम सब कुछ समाप्त कर चुके हो। अब तुम से वह काम सम्भव नहीं है, लेकिन जानना चाहते हो तो सुनो – ''तुम्हारे जन्मकाल के समय समाचार पत्र में किसी लड़के के इंग्लैण्ड जाकर आई.सी.एस. की परीक्षा पास करने का समाचार छपा था। जिसे पढ़कर मैंने भी तुम्हें इंग्लैण्ड भेजकर आई.सी.एस. बनाने का सपना संजोया था और तुम्हें बी.एस.सी. की परीक्षा पास कराकर इंग्लैण्ड भेजना चाहता था, जिससे तुम भटक गये हो। तब बड़े विश्वासपूर्वक सुभाष ने अपने पिता का चरणस्पर्श करते हुए कहा – ''मैं संकल्प लेता हूँ पिता जी! बी.एस.सी. की परीक्षा पास कर इंग्लैण्ड अवश्य जाऊँगा और आई.सी.एस. की डिग्री प्राप्त कर आपके श्री चरणों पर अर्पित करूँगा। आप मुझे केवल आशीर्वाद देकर अनुगृहीत करें।''

अब यह सम्भव न होगा सुभाष! क्योंकि तुम इण्टर की परीक्षा दिये बिना पढ़ाई छोड़ चुके हो। अब नेतागिरी छोड़कर पुनः पढ़ने की ओर जाना असम्भव लगता है। नहीं पिता जी! दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं होता। मनुष्य अगर किसी काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प कर ले तो उस काम को किये बिना उसे चैन नहीं मिलता। भले भीषण से भीषण बाधाएँ भी उसके राह पर रोड़े बनकर आ जायें, लेकिन यह मंजिल पाकर ही दम लेता है। मैं देश को आजाद कराना अवश्य चाहता हूँ पिता जी! लेकिन देशभक्ति से अधिक बड़ी पितृभक्ति होती है। देश पुत्र का भरण–पोषण करता है, परन्तु पिता पुत्र को जन्म देता है। अतएव देशभक्ति से पितृभक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है। अतः मैं पहले पिता को प्रसन्न कर, पीछे देश की सेवा करूँगा।

सुभाष ने अपने पिता को आश्वस्त कर पुनः महाविद्यालय में नामांकन करा लिया और बी.एस.सी. तक की परीक्षा पास करने के पश्चात् इंग्लैण्ड चले गये और वहां से आई.सी.एस. में सफलता प्राप्त कर अपने घर लौट आये। सुभाष के पिता जानकीनाथ बोस को जब इसकी जानकारी हुई तो वे काफी खुश हुए तथा पुत्र को बुलाकर बहुत आशीर्वाद दिया और डिग्री प्राप्त करने के लिए बधाई भी दी। सुभाष ने भी आई.सी.एस. में उत्तीर्ण होने की डिग्री पिताश्री के चरणों पर चढ़ा दी और विनम्रतापूर्वक चरणस्पर्श करते हुए कहा – ''पिता जी! अब तो आप हमसे प्रसन्न हैं न.....? क्योंकि आपका सपना और मेरा संकल्प दोनों साकार हो गये। हाँ सुभाष! अब मैं प्रसन्न हूँ। तुमसे कोई शिकायत नहीं है। मेरी समझ में यह बात भी आ गई कि दृढ़ संकल्प के सहारे मनुष्य असम्भव को भी सम्भव बना सकता है जैसा कि तुमने आज करके दिखा दिया है।

इस पर विनम्रतापूर्वक सुभाष ने कहा – ''आपके आदेश का अनुपालन तो हो गया पिता जी! अब मेरा अरमान देश को आजाद कराने का है, जिसका मैं हृदय से संकल्प ले चुका हूँ। अतः इसकी सफलता के लिए आशीर्वाद दीजिए।'' इसके बाद सुभाष चन्द्र बोस पुनः स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। यह नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की देशभक्ति के साथ–साथ पितृभक्ति भी थी।

सुभाष चन्द्र बोस ने मृत्युपर्यन्त देशभक्ति और पितृभक्ति दोनों मर्यादाओं का एक साथ निर्वहन किया। यह महान् उदाहरण आज के पिता–पुत्र के बीच टूटते रिश्तों के लिए न केवल प्रेरक हैं, अपितु अनुकरणीय भी। इस प्रकार अपने बलबूते पर अद्भुत साहस प्रदर्शित करने वाले नेता जी सुभाष चन्द्र बोस वास्तव में अभिमन्यु थे। अभिमन्यु की तरह छोटी अवस्था में ही उनका शौर्य दिखने लगा था।

^dne dne c<k;s tk] [k'kh d xhr xk;s tkA
;g fgUnxh g dke dh] r dke i feVk;s tkA**---

वर्तमान नवयुवक अनुभव करें कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ मात्र धन कमाना है या साथ ही माता–पिता तथा देश के प्रति निष्ठा में बांधने के लिए? नेता जी ने आजाद हिन्दी फौज के सैन्य 'काशन' तथा प्रयाण गीत (मार्च पास्ट) में जन भाषा हिन्दी को ही मान्यता दी। ऐसे थे दूरदर्शी नेता जी।

यथार्थ परिप्रेक्ष्य में 'वैदिक संस्कृति'

– रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन आर्य तिवारी

वैदिक संस्कृति ही विश्व की प्राचीन तथा महानतम संस्कृति है। इसीलिए इसे हमारे ऋषि, मुनियों ने वेदप्रतिपादित ''सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'' को सिद्ध कर दिखलाया हैं। जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर प्राणिमात्र का हित हो, इन विचार–परम्पराओं का नाम ही 'संस्कृति' हैं। वैदिक संस्कृति में जीवनयापन का जो उच्च आदर्श रखा है, वह अन्य किसी, संस्कृति या विचारों में नहीं हैं। इस रहस्य को समझने के लिए वेदों तथा उपनिषदों का संस्कार के प्रति जो यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है, उसे समझने तथा जानने की आवश्यकता है।

संसार में दो तरह की संस्कृतियाँ हैं, पहली भोगवादी जिसे हम 'भौतिकवादी संस्कृति' कहते हैं तथा दूसरी 'अध्यात्मवादी संस्कृति'। भौतिकवादी संस्कृति संसार के सुख–ऐश्वर्यों को भोगना तथा आत्मा–परमात्मा जैसे तत्वों को न मानना है। भौतिकवादी संस्कृति का आधार आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ हैं, जबकि अध्यात्मवादी संस्कृति जिसे हम वैदिक संस्कृति मानते हैं, जिसका वैदिक दृष्टिकोण समन्वयात्मक हैं, न निरा भोगवादी है, न निरा त्यागवादी हैं। ईश्वर ने सृष्टि जीवों के उपभोग के लिए ही बनाई है। सारे संसार का वैभव मनुष्य के उपभोग के लिए ही तो हैं, यजुर्वेद में कहा है, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' – शरीर तथा संसार सत् है, इसलिए इनका भोग करो, परन्तु ये अन्त तक टिकने वाले नहीं हैं। इसलिए संसार को त्याग भाव से भोगो। जैसे हम यात्रा के समय किसी होटल में रूकते हैं। वहाँ की हर वस्तु का हम उपभोग लेते हैं, तथा होटल छोड़ते समय हम अपने अगले लक्ष्य की ओर बढ़ जाते हैं। वहाँ की वस्तुओं से हमें तनिक भी मोह नहीं होता।

भोग तो भोगने के लिए ही हैं, किन्तु उसमें फंसकर हमें अपने लक्ष्य को नहीं भूलना है। उपनिषदों ने लक्ष्य के सम्बन्ध में कहा है 'नाल्पे सुखमस्ति भूमा वै सुखम्।' यह लक्ष्य 'भूमा' अर्थात् अनन्त को पाने का है, जो भोग हमें भोगने चाहिए, वे भोग ही हमें भोग लेते हैं, मगर भोगों के प्रति हमारी तृष्णा समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। ईश्वर ने इन भोगों द्वारा सुखों की मात्र झलक ही हमें दिखलाई हैं। सच्चा सुख तो मात्र ईश्वर प्राप्ति में ही हैं और वही हमारा 'लक्ष्य' होना चाहिए। ऋग्वेद का 'इन्द्र अगस्त्य संवाद' इसी बात की पुष्टि करता है। इन्द्र ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है तथा अगस्त्य जीवात्मा का। गर्भस्थ जीव अष्टममास में अपनी बुद्धि में विचार कर रहा है कि बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में पड़कर मैने बहुत यातनाएँ भोगी है। इस बार जन्म लेकर मैं साख्य तथा योग का अभ्यास करूँगा। अर्थात् इसके अभ्यास से जन्म–मरण के चक्कर से छूटने का उपाय करूँगा। मगर दशममास में उत्पन्न होकर बाहर की वायु का स्पर्श पाकर, अपनी उस ईश्वर के सम्मुख की प्रतिज्ञा को भूल जाता है। तब इन्द्र (परमेश्वर) कहता है कि 'जीव का चित्त परिवर्तनशील है। जीव जन्म लेकर सांख्य योग के अभ्यास की अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ अपने प्राणों के पोषण में लग जाता है।

वैदिक संस्कृति सृष्टिनियमानुकूल त्यागभाव पर ही आधारित है। इसका मूल इसी भाव में निहित है। जिससे संसार में सुख–शान्ति स्थापित हो सकती है। संसार में हर वस्तु को समयानुसार स्वेच्छा से या बलपूर्वक त्यागना ही पड़ता है। यदि स्वेच्छापूर्वक कार्य होगा, तो वह दुःख का कारण नहीं बन पायेगा, और यदि बलपूर्वक होगा तो उससे दुःख उठाना ही पड़ेगा। इसीलिए वैदिक संस्कृति में 'आश्रमव्यवस्था' को महत्त्वपूर्ण माना गया है। आयु के अनुसार आश्रमव्यवस्था हमारे जीवन यापन का उचित ढंग तथा निहितकार्य का निर्देशन करती है। इसी तरह वैदिक वर्णव्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का निर्देशन करती हैं। समाज के जो शत्रु हैं, जैसे अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा आलस्य। इन्हें अपने–अपने सामर्थ्यानुसार उस–उस वर्ण के कार्य विभाग के द्वारा दूर किया जा सकता है। क्योंकि कार्य विभोजित होने से उस कार्य का उत्तम रूपेण सम्पादन हो पायेगा।

वैदिक संस्कृति में यह कार्य गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा हुआ करता है। जो जिस कार्य के योग्य होगा, उसे उसी कार्य को वरण करने का निर्देश आचार्य द्वारा किया जाता है। वैदिक संस्कृति त्याग में निहित स्वेच्छावृत्ति को मानती हैं। अपनी इच्छाविरूद्ध बलपूर्वक कराये गये 'त्याग' को वह नहीं मानती। अपनी किसी वस्तु को बलपूर्वक किसी के द्वारा छीन लिया जाना और अपनी किसी वस्तु को वापस न ले पाने की असमर्थता को त्याग कहना, यह त्याग की मूलभावना को न समझना ही है। वैदिक संस्कृति अन्याय सहने को गलत मानती है। इतिहास गवाह है कि महाराज राम ने रावण के अन्याय के विरूद्ध अपने क्षत्रिय धर्म का परिचय देते हुए रावण को पराजित कर उसका अर्जित राज्य उसके भाई बिभीषण को सौंप दिया। उन्हें उस राज्य का किंचित भी मोह नही हुआ, यही त्यागभाव का वास्तविक अर्थ है।

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है। क्योंकि हमने धर्म के वास्तविक अर्थ को जाना ही नहीं है। हम तो मात्र धर्म की अमान्यता के डर को भुलाने के लिए धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। आज के आधुनिक युग में धर्म को हमने फैशन समझ लिया है। महाराज मनु द्वारा निर्दिष्ट धर्म के लक्षणों को हमने कभी जानने और आचरण में लाने का प्रयास ही नहीं किया है। आजकल सभी ओर वैदिक सिद्धान्तों की अवमानना हो रही है।

जिस तरह विज्ञान की मान्यताएँ उसके प्रात्यक्षिकों द्वारा मान्य की जाती हैं, उसी तरह पतंजलि मुनि ने वेदों की मान्यताओं को योगदर्शन द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाया है। अष्टांग योग द्वारा ईश्वर सिद्धि का मार्ग बताया है।

आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं। उनमें परिवर्तन, परिवर्धन की आवश्यकता होती है, मगर हमारी योग सम्बन्धी मान्यताओं को हमारे ऋषि, मुनि तथा योगिजनों ने सिद्धकर दिखाया है, हमें मात्र उस तपः पूर्ण मार्ग का अनुकरण करने की आवश्यकता है। योग को जन–जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य हमारे महापुरुषों ने कर दिखाया है, आगे उसे अपनाकर अपने जीवन को वैदिक संस्कृति के अनुरूप बनाना हमारा कार्य है। योग ने यम–नियमों के पालन को अतिमहत्त्वपूर्ण माना है, जिससे स्वयं में तथा समाज में अनुशासन प्रस्थापित होगा। वैदिक संस्कृति में पतंजलि मुनि के पाँच यमों को मानव समाज के जीवनरूप भवन का आधारस्तम्भ माना है, जिसके पालन से मनुष्य भोगवादी संस्कृति से छूटकर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यम हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा परिग्रह, जिन्हें जानना अति आवश्यक है।

1) अहिंसा – अहिंसा का अर्थ है हिंसा से बचना। हिंसा तीन प्रकार की होती है – कायिक, वाचिक और मानसिक। अहिंसा आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है जो कि वैदिक संस्कृति का सूचक है। वैदिक संस्कृति का भवन इसी अहिंसा के स्तम्भ पर खड़ा है, जो आज की बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति को रोक सकता है और सबके लिए 'जिओ और जीने दो' का पाठ सिखाता है।

2) सत्य – सत्य तो प्रकाश स्वरूप है, सत्य को पतंजलि मुनि ने 'महाव्रत' कहा है। जो मन में हो, वह वाणी से निकलना चाहिए तथा जो वाणी से कह दे, वह कर्म में आना चाहिए। आज जीवन इससे विपरीत चल रहा है। इसका परिणाम हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में दिखाई दे रहा है। वैदिक संस्कृति का कहना है 'अनृतात् सत्यं गमय' झूठ से निकलकर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है।

3) अस्तेय – स्तेय का अर्थ है चोरी व अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। यद्यपि सभी लोग चोरी को बुरा कहते हैं, मगर सूक्ष्मतासे देखा जाये तो सभी लोग किसी ना किसी प्रकार की चोरी करते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि दूसरे की वस्तु छल–कपट से दूसरे के बिना जाने उड़ा लेना या बलपूर्वक छीन लेना चोरी ही है। मगर वैदिक संस्कृति इससे भी आगे जाकर यह मानती है कि चोरी जब पकड़ी जाये, तब चोरी कहलाती है, मगर मन में उसका विचार आना भी चोरी जैसा ही है। अतः 'अस्तेय' के इसी अर्थ को मानना चाहिए।

4) ब्रह्मचर्य – अर्थात् ब्रह्म के समान 'महान बनना।' अपने जीवन को छोटे से बड़ा बनाने का प्रयत्न करना। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ यह भी है कि अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना और उसमें भी अपनी कामवासना पर विजय पाना।

आज का समाज विषय वासना में डूबा हुआ है, जिसके दुष्परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। हर क्षेत्र में आज सैक्स ही सैक्स दिखलाई पड़ रहा है। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर ब्रह्मचर्य के महत्त्व को भूल बैठे हैं। इसके परिणाम स्वरूप बलात्कार जैसी घटनाएँ आज सामान्य होती जा रही हैं। आज राष्ट्रीय दूरदर्शन जैसे प्रसार माध्यमों द्वारा 'कंडोम' का विज्ञापन ज्यादा ही जोर शोर से दिखाया जा रहा है। हमारी सरकार हमें जानवरों से भी गया–बीता समझ रही है, क्योंकि आजतक जानवरों को भी यौन शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ी, जो कि शिक्षित कहलाने वाले मनुष्यों को आज दी जा रही है। इसके विपरीत संस्कारों को वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाने वाले 'ब्रह्मचर्य' की शिक्षा हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनिवार्य करनी चाहिए।

½5½ vifjxg & परिग्रह का अर्थ होता है 'संग्रह करना'। अपनी आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का जुटाना। हमारी संस्कृति त्याग पर आधारित है। संसार का नियम 'अपरिग्रह' का है, छोड़ने का है। अस्तेय के विषय में हमने जाना कि किसी दूसरे की वस्तु का मोह न करना, यह ठीक भी है। बहुत से लोग कहते हैं हम किसी दूसरों की वस्तु का मोह नहीं करते। अपना जो कुछ है, उसी से काम चलाते हैं, मगर वैदिक संस्कृति इससे एक कदम आगे चलकर कहती हैं कि, 'अस्तेय' का पालन करना तो ठीक है, मगर 'अपरिग्रह' का वास्तविक अर्थ अपने अधिकार की वस्तु का स्वेच्छापूर्वक त्याग करना है। आज हम समाज में बहुत लोगों को देखते हैं, जो लोकेषणा में बड़े–बड़े काम चंदा इकट्ठा कर करते हैं। मगर अपनी गाँठ को ढीली नहीं करना चाहते, धन सम्पन्न होते हुए भी न देना 'अपरिग्रह' के वास्तविक अर्थ को न जानना ही है।

ईश्वर ने सृष्टि आरम्भ में ही इसका समाधान वेद द्वारा कर रखा है। जिस प्रकार बाजार में आई नई वस्तु के साथ अल्पबुद्धि, उत्पादक मनुष्य उस वस्तु के व्यवहार का पूर्ण विवरण दे देते हैं, तो ईश्वर बिना ज्ञान के कैसे मनुष्य को सृष्टि में भेज देता? हमें मात्र उस ज्ञान को अपनाने और अध्ययन कर अनुकरण करने की आवश्यकता है। जिज्ञासा मनुष्य से सब कुछ करवा लेती हैं। हमारे सामने पाश्चात्य लोगों का उदाहरण है – वेदों के अध्ययन हेतु उन्होंने भाषा को सीखा और वेदों का अध्ययन कर उसकी वास्तविकता को माना। मगर हाय रे हमारे देश के युवक युवतियाँ! जिन्हें सूर्य उदय देखना भी नसीब नहीं होता, मगर जिस दिन वे सूर्योदय को देख लेंगे, उस दिन से निश्चय ही कुछ अधिक जानने की जिज्ञासा उनमें उत्पन्न होगी, ईश्वर सभी को सद्बुद्धि प्रदान करें।

आर्य समाज का एक और स्तम्भ ढह गया
'पद्मश्री' डॉ. टी. वी. नारायण जी का आकस्मिक निधन

आर्य समाज के कर्मठ आर्य नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के पूर्व प्रधान तथा 'पद्मश्री' डॉ. टी. वी. नारायण जी का गत 11 जनवरी, 2022 को आकस्मिक निधन हो गया। डॉ. नारायण जी एक सुलझे हुए सामाजिक एवं आर्य नेता थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान भी रहे। सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के साथ लम्बे समय तक उन्होंने कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी वे सम्मिलित हुए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी वे उपप्रधान रहे थे। उनका पूरा परिवार आर्य समाज के विचारों से ओत–प्रोत रहा है। उनके द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' पुरस्कार से पुरस्कृत किया था।

डॉ. टी. वी. नारायण जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि डॉक्टर साहब बहुत ही सुलझे हुए व्यक्ति थे। सामाजिक कार्यों के दौरान कई बार हमारी उनसे मुलाकात हुई। मुलाकात के दौरान वह हमेशा देश एवं समाज के सभी वर्गों की उन्नति के बारे में विचार–विमर्श तथा पूरे देश में आर्य मान्यताओं को और तीव्र गति से बढ़ाने की बात किया करते थे। वे हमेशा कहा करते थे कि यदि देश का सही मायने में विकास एवं उद्धार करना है तो स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज की विचारधारा को लागू करके ही किया जा सकता है। ऐसे महान दूरदर्शी आर्यनेता का हम सबके बीच से अचानक चले जाना निश्चित रूप से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। डॉक्टर साहब को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा सद्गति प्रदान करें और शोकाकुल परिवार को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ (पाईकमाल), जिला-बरगढ़ (उड़ीसा) में उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार का भव्य आयोजन सम्पन्न

एवं विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समय-समय पर यहाँ पधारकर आप सब अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ देते रहें तो हम सबका मनोबल भी बना रहेगा। वेदारम्भ संस्कार से पूर्व गुरुकुल के नये आचार्य का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया गया और उन्हें स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज द्वारा गुरुकुल का दायित्व सौंपा गया। नये आचार्य सोम्य रज्जन शास्त्री ने दायित्व संभालने के बाद गुरुकुल के अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सायंकाल के सत्र में यज्ञ के उपरान्त स्वामी व्रतानन्द जी, आचार्य बृहस्पति जी, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री आदि के भी व्याख्यान हुए। गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों ने भी अपने व्याख्यान एवं भजनों के द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

2 जनवरी, 2022 को प्रातः दो महानुभावों को वानप्रस्थ की दीक्षा स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा दी गई। दीक्षा समारोह एवं यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त युवा संन्यासी आदित्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ और उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदान होने वाले महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृति है और इसकी रक्षा के लिए समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने अपने तप और त्याग के द्वारा इसे आगे बढ़ाया है। सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत पर्यंत पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति का प्रभाव रहा है, किन्तु महाभारत के बाद अन्य मत-मतान्तरों ने दुनिया के लोगों को विभिन्न वर्गों में बांट डाला और वैदिक संस्कृति का पतन हो गया। किन्तु ईश्वर की महती कृपा से युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनः वेदों की ओर लौटो का नारा देकर वैदिक संस्कृति से पूरे विश्व को परिचित कराया। आज हम सबको चाहिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत करें और वैदिक संस्कृति को पुष्पित एवं पल्लवित करें।

इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान की ओर से गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ पाईकमाल, बरगढ़ एवं कन्या गुरुकुल, देवनगर, घुचापाली, बरगढ़ उड़ीसा के लगभग 175 छात्र-छात्राओं को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किए। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया और उनका सहयोग आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री व आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने किया। वस्त्र स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी प्रणनन्द जी के कर-कमलों से बंटवाये गये। कार्यक्रम के समापन के पश्चात् ब्रह्मचारियों के व्यायाम प्रदर्शन का आकर्षक कार्यक्रम हुआ, जिसकी उपस्थित जनसमूह ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मध्यान्ह 2 बजे प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस दो दिवसीय समारोह में डॉ. ब्रह्म प्रकाश जी दिल्ली, श्री आरूणी शास्त्री, श्री यज्ञदेव शास्त्री, आचार्य प्रेम प्रकाश शास्त्री, श्री राकेश उपाध्याय रायपुर आदि भी उपस्थित रहे।

स्व. श्री राजेन्द्र सूद की पुण्य तिथि पर उनके निवास-रोपड़, पंजाब में उनकी स्मृति में विशेष यज्ञ का हुआ आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी व हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रबोध सूद एडवोकेट भी हुए सम्मिलित

पूज्य माता विमला सूद श्रीमती स्व. श्री राजेन्द्र सूद की पुण्य तिथि 7 जनवरी, 2022 को उनके निवास स्थान रोपड़, पंजाब में उनकी स्मृति में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, हिमाचल सभा के प्रधान श्री प्रबोध सूद आदि भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। विदित हो कि स्व. श्री राजेन्द्र कुमार सूद रोपड़ के एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे और उनका व्यापक जनाधार एवं जन सम्पर्क था। वे मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं सेवाभावी होने के कारण लोगों के अत्यन्त प्रिय थे। उनका देहावसान मात्र 59 वर्ष की आयु में हो गया था किन्तु उनके देहावसान के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी पूज्या माता बिमला सूद ने उनके दायित्वों को बड़ी निष्ठा एवं कुशलता के साथ संभाला। माता जी की बड़ी सुपुत्री प्रिं. सुमन सूद के पतिदेव श्री प्रबोध सूद एडवोकेट वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान हैं। पूज्य माता बिमला सूद जी के परिवार से स्वामी आर्यवेश जी का सम्पर्क लगभग 35 वर्षों से निरन्तर चला आ रहा है। उनका आशीर्वाद एवं सहयोग सामाजिक कार्यों में प्राप्त होता रहता है। अतः माता जी के आग्रह पर 7 जनवरी, 2022 को स्व. श्री राजेन्द्र कुमार सूद की पुण्य तिथि के अवसर पर यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से रोपड़ पधारे। माता जी के दामाद श्री प्रबोध सूद एवं उनकी बेटी प्रिं. सुमन सूद भी सोलन से यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए पहुंचे हुए थे।

इस अवसर पर माता जी के यजमानत्व में विशेष यज्ञ किया गया और उसके पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने प्रवचनों द्वारा उपस्थित महानुभावों को जहाँ लाभान्वित किया वहीं स्व. श्री राजेन्द्र सूद जी को श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

इस अवसर पर माता जी के छोटे सुपुत्र श्री संजीव जी व उनकी धर्मपत्नी तथा श्री विनोद चौधरी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त श्री प्रबोध सूद जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने माता जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना की।

परोपकारी संगठन मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अनेक गुरुकुलों में वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया

गुरुकुल पौंधा, देहरादून व आर्ष कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली, देहरादून (उत्तराखण्ड) में वस्त्र वितरण समारोह

समाज सेवी संगठन मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा दिनांक 27 दिसम्बर, 2021 को गुरुकुल पौंधा, देहरादून व आर्ष कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली देहरादून में श्रीमान वीरसेन जी मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी जी अमेरिका निवासी के सौजन्य से सभी छात्र–छात्राओं को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक सूट वितरित किये गए। गुरुकुल पौंधा देहरादून में प्रात 9 से 10.30 बजे तक आचार्य डॉ. धनंजय जी, श्री चन्द्रभूषण जी शास्त्री, श्री भूपेश शास्त्री, श्रीमती अंशु गोगिया व मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री एवं कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी के सानिध्य में गुरुकुल की भव्य यज्ञशाला में 80 ब्रह्मचारियों को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किये गए।

इस अवसर पर आचार्य डॉ. धनंजय जी ने अपने उद्बोधन में मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा किये गये इस परोपकारमय कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। मानव सेवा प्रतिष्ठान के

प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री व कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी ने गुरुकुल के समस्त अधिकारियों का धन्यवाद करते हुए ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। दोपहर 12.30 बजे से 2 बजे तक आर्ष कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली देहरादून में प्रिंसिपल श्री आदेश जी, श्रीमती स्नेहलता गोगीया, मनीषा व मिनी गोगीया तथा आचार्य धनंजय जी, श्री चन्द्रभूषण जी शास्त्री, श्री भूपेश शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री एवं श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री के सानिध्य व आचार्या डॉ. अन्नपॅर्णा जी के संयोजन में सभी 75 छात्राओं को गर्म वस्त्र ट्रैक शूट वितरित किए गए।

इस कार्यक्रम में वितरित वस्त्रों पर लगभग 75 हजार रुपए का खर्च आया जिसे धर्मनिष्ठ, यज्ञ प्रेमी श्रीमान वीरसेन जी व श्रीमती सविता मुखी जी ने प्रदान किया। सभी अतिथियों ने अपनी उपस्थिति एवं उद्बोधन से कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न करते हुए अपने–अपने विचारों से लाभान्वित किया। आचार्या अन्नपूर्णा जी ने मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं अतिथियों का धन्यवाद किया।

गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में वस्त्र वितरण समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य जगत के महान संन्यासी, त्यागी, तपस्वी अनेक गुरुकुलों के संस्थापक व संचालक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में मानव सेवा प्रतिष्ठान के द्वारा

श्री वीरसेन मुखी जी व श्रीमती सविता मुखी जी के सौजन्य से दिनांक 29 दिसम्बर, 2021 को गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली के 80 ब्रह्मचारियों को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने अपने उद्बोधन में मानव सेवा प्रतिष्ठान व श्री वीरसेन मुखी जी एवं श्रीमती सविता मुखी जी का गुरुकुल परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया। मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, उपप्रधान श्री सोमदेव शास्त्री, कार्यकर्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री, श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता ग्रेटर कैलाश भी उपस्थित रहे।

गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ पाईकमाल, बरगढ़ एवं कन्या गुरुकुल, देवनगर, घुचापाली, बरगढ़ उड़ीसा में वस्त्र वितरण समारोह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक व संचालक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, पं. नरदेव जी यजुर्वेदी हॉलैण्ड, पं. ओम प्रकाश यजुर्वेदी दिल्ली, मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, उपप्रधान श्री सोमदेव जी शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी, आचार्या शारदा जी, अधिष्ठाता श्री अनन्त शास्त्री आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों के सानिध्य में मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा श्री वीरसेन जी मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी जी के सहयोग से 2 जनवरी, 2022 को गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ पाईकमाल, बरगढ़ एवं कन्या गुरुकुल, देवनगर, घुचापाली, बरगढ़ उड़ीसा के 175 छात्र–छात्राओं को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किए गए।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में वस्त्र वितरण समारोह

दिनांक 5 जनवरी को आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में स्वामी ऋत्षपति जी महाराज, स्वामी ब्रहानन्द जी हिसार, आचार्य सत्यसिन्धु जी, महाशय भीम सिंह आटा पानीपत, श्री धुरेन्द्र शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, उपप्रधान श्री सोमदेव जी शास्त्री तथा कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री के सानिध्य एवं श्रीमान वीरसेन मुखी तथा श्रीमती सविता मुखी जी के सहयोग से गुरुकुल के सभी 75 ब्रह्मचारियों को गर्म वस्त्र एवं ट्रैक शूट वितरित किये गए। इस अवसर पर स्वामी ऋत्षपति जी, श्री रामपाल शास्त्री जी व श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री ने उद्बोधन देते हुए आशीर्वाद प्रदान किया।

– डॉ. कवर सिंह शास्त्री, महामन्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान

वैदिक ज्ञान विज्ञान को विश्व पटल पर रख रहे हैं आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री – विश्राम वाचस्पति

जन्मदिन आत्म मूल्यांकन का महापर्व है – आचार्य चंद्रशेखर

आचार्य जी के नेतृत्व में 50 देशों के लोग वैदिक चिन्तन–मनन तथा अध्यात्म पथ से जुड़ेंगे

विश्व के अनेक देशों से आर्य मनीषियों तथा अध्यात्म प्रेमियों ने आचार्य जी को दी जन्मदिन की बधाइयाँ

अध्यात्म पथ पत्रिका के सौजन्य से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का जन्मदिन 1 जनवरी, 2022 को 252वें वैबिनार ऑनलाइन जूम के माध्यम से धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देश–विदेश के अध्यात्म प्रेमियों ने आचार्य चन्द्रशेखर जी को जन्मदिन की बधाई देते हुए उनके दीर्घ जीवन तथा स्वास्थ्य की मंगल कामना की। इस अवसर पर आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी ने कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी मानवता की सेवा में संलग्न हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मानवता को लोक कल्याण तथा अध्यात्म का मार्ग दिखाया है।

हिन्दू शुद्धि सभा के जनक गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रपौत्र विश्राम वाचस्पति जी ने कहा कि आर्य समाज ने वेदों को भारतीय संस्कृति के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया है। आर्य समाज के समस्त सिद्धांत वेदों का अनुकरण करते हैं। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने वेदों के दुरूह समझे जाने वाले मंत्रों को आम जनता के लिए सहज सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। आचार्य जी के प्रशंसक भक्त तथा सत्संगी वेद मंत्रों के विचारों को अपने जीवन में धारण कर रहे हैं।

वेस्ट जोन की चेयरपर्सन श्रीमती श्वेता सैनी ने कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी जो कार्य कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। आचार्य जी का जीवन और उनके उपदेश हम सबका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

श्री ओम सपरा पूर्व मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट ने जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा कि –

वेदों का प्रचारक बना धर्म का प्रचारक और यह सच्चा मार्गदर्शक हमारा है।

शुभचिंतक सबका मददगार सुख–दुख का साथी और जनता का सहारा है।

गुरूकुल की आचार्या प्रीति, प्रणति व श्रद्धान्जली जी ने ईश्वर स्तुति के मंत्र व भजन तथा आयुष्काम मंत्रों का पाठ तथा स्वागत गीत से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य सुमन जी सुमधुर बधाई, ईश्वर स्तुति, स्वामी दयानन्द गौरव गाथा के भजनों के माध्यम से संगीत की सरिता बहाई। भजन के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा तथा प्रभु भक्ति के आनन्द को सभी श्रद्धालु श्रोताओं ने अनुभव किया।

मॉरीशस आर्य समाज के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी ने कहा वेदों में सत्य विद्याओं का प्रकाश है। आज सम्पूर्ण विश्व वेद मंत्रों का अनुसरण करके विश्व में शांति स्थापना कर सकता है।

कनाडा से इंडो कैनेडियन सीनियर क्लब की उप प्रधान श्रीमती सरोजिनी जौहर ने कहा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने मानव जीवन उच्च मूल्य नैतिक मूल्यों के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नैतिकता हमें सेवा समर्पण तथा सहयोग का पाठ पढ़ाती है।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा मानव जीवन सोना, खाना या भोग करना ही नहीं है। अध्यात्म पथ पर चलकर पुरुषार्थ चतुष्टय के माध्यम से सेवा समर्पण करते हुए मुक्ति तक की यात्रा करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। हम सबको इसी लक्ष्य को याद रखते हुए अपने जीवन को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। इसीलिए यजुर्वेद का 40वाँ अध्याय हम सबको कृतम स्मर का उपदेश देता है। जन्मदिन आत्म मूल्यांकन का महापर्व है।

श्री नरेश वर्मा धुरंधर, स्वर्णा सेतिया तथा श्री संजय सेतिया जी के सुमधुर भजन आकर्षण का केन्द्र रहे। श्री यशपाल जी एवं मोहिनी जी ने सपरिवार आचार्य जी को भजन व सुन्दर वीडियो के माध्यम से बधाई दी। आचार्य जी के विभिन्न कार्यों का प्रस्तुतिकरण सराहनीय था।

श्री हरीश ओबेराय जी, मॉरीशस आर्य समाज के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी, श्री ओम सपरा जी, श्री विनोद बब्बर, श्वेता सैनी, सरोजनी जौहर कनाडा, श्री विश्राम वाचस्पति जी, श्री डालेश त्यागी जी सभी ने आचार्य जी के वैदिक मान्यताओं पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उनको कर्मठ, समाजसेवी, दयानन्द का सच्चा सिपाही, वेद मनीषी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सहज, सरल, सबका मददगार, चिंतक, लेखक बताते हुए सभी का मार्गदर्शन करने वाले शुभचिंतक आचार्य जी को जन्मदिन की बहुत बधाईयाँ दी।

देश–विदेश में आर्यसमाज के कार्यों के माध्यम से ऋषि मिशन को निरन्तर बढ़ा रहे हैं। देश–विदेश से जुड़े श्रद्धालुओं के बीच श्री ज्योति भूषण जी को मानव रत्न सम्मान, श्री अभय सिन्हा जी को अध्यात्म रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री अश्विनी नांगिया जी ने सपरिवार अध्यात्म पथ पत्रिका का विमोचन किया। अन्त में कविता आर्या जी का सुमधुर बधाई गीत, शान्तिपाठ व जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। 3 घन्टें 15 मिनट चले इस कार्यक्रम की सभी ने सराहना की तथा आचार्य जी को ऐसे आयोजन करते रहने का तथा दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

पूर्व पार्षद श्री यशपाल आर्य जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के किए हुए लोक कल्याण के कार्यो को प्रस्तुत करते हुए उनकी प्रशंसा की तथा ईश्वर से प्रार्थना की कि आचार्य जी 100 वर्षों से अधिक समय तक मानव कल्याण के कार्यों में इसी ऊर्जा के साथ लगे रहें। 'राष्ट्र किंकर' पत्रिका के सम्पादक डॉ विनोद बब्बर ने कहा साहित्य समाज का दर्पण है। किन्तु कभी–कभी साहित्य समाज को दर्पण दिखाकर उसे सुधारने का प्रयास करता है। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री समाज सुधारक होने के साथ–साथ साहित्य के सृजनकर्ता भी हैं। मैं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की साहित्य साधना को नमन करता हूँ।

– दमयंती गुप्ता, संवाददाता अध्यात्म पथ

वैदिक विरक्त मण्डल के वरिष्ठ सदस्य स्वामी सुकर्मानन्द जी का अचानक निधन

वैदिक विरक्त मण्डल के वरिष्ठ सदस्य स्वामी सुकर्मानन्द जी का दिनांक 9 दिसम्बर, 2021 को हृदयगति रूक जाने के कारण लगभग 83 वर्ष की आयु में गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में अचानक निधन हो गया। वह गुरुकुल गौतमनगर के वार्षिकोत्सव समारोह में भाग लेने के लिए दिल्ली आये हुए थे। स्वामी सुकर्मानन्द जी का जन्म एक सम्पन्न किसान परिवार में ग्राम-शाहपुर, जिला-बिजनौर, उत्तर प्रदेश में हुआ और उनका पूर्व नाम श्री होरीलाल आर्य था। वह पंचायत सचिव के रूप में सरकारी सेवा करते रहे तथा अपने पारिवारिक दायित्वों का उन्होंने कुशलता पूर्वक निर्वहन किया। उन्होंने सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वर्ष 2013 में संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर अपना जीवन समाजसेवा के कार्यों में लगाने का संकल्प लिया। स्वामी सुकर्मानन्द जी समाजसेवा, दान देने, त्याग तथा साधक प्रवृत्ति से ओत-प्रोत थे। उनकी वेद प्रचार में गहरी रुचि थी। उन्होंने अनेक जन-चेतना यात्राओं, आर्य समाज के सम्मेलनों, चतुर्वेद पारायण यज्ञों में विशेष रूप से भाग लेकर अपना योगदान आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में प्रदान किया।

स्वामी जी ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक की निर्माणाधीन यज्ञशाला के लिए 51 हजार रुपये का सात्विक दान देकर अपनी दानी प्रवृत्ति का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। ऐसे त्यागी, तपस्वी, समाजसेवी एवं वीतराग संन्यासी का अचानक निधन वैदिक विरक्त मण्डल एवं आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति है।

स्वामी सुकर्मानन्द जी के अचानक निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना किया।

आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के कर्मठ कार्यकर्ता महाशय बेगराज जी ग्राम-हुमायूपुर, जिला-रोहतक का असामयिक निधन

आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के कर्मठ कार्यकर्ता आदरणीय महाशय बेगराज आर्य जी, ग्राम हुमायुपूर, जिला-रोहतक का विगत दिनों असामयिक निधन हो गया है। आदरणीय महाशय जी तथा उनका पूरा परिवार आर्य विचारों से ओत-प्रोत रहा है। महाशय जी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी एवं आचार्य बलदेव जी के विशेष सहयोगियों में से एक थे। महाशय जी इन सभी महानुभावों के साथ मिलकर अपने जीवन में आर्य समाज का काफी कार्य किया। महाशय जी तथा उनके सुपुत्रों ने पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के सान्निध्य में उड़ीसा प्रान्त में संचालित होने वाले गुरुकुलों में विशेष योगदान दिया है। उनका जीवन पूर्णतया सात्विक एवं पवित्रता से ओत-प्रोत था। ऐसे समाजसेवी ऊर्जावान एवं कर्मठ आर्य कार्यकर्ता का निधन आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

महाशय वेगराज आर्य जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य जी का देहावसान

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य जी का विगत दिनों अचानक निधन हो गया। श्री वेद प्रकाश जी बचपन से ही आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं विचारों से ओत-प्रोत रहे। वह कई वर्षों तक आर्य समाज शिवाजी कालोनी, रोहतक के पदाधिकारी के रूप में निष्ठा एवं समर्पण के साथ अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहे। स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज में जब युवाओं को सम्मिलित करके राष्ट्र सेवा में लगाने का विशेष अभियान चल रहा था, उन युवाओं में श्री वेद प्रकाश जी भी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए थे और लम्बे समय तक स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते रहे। बाद में वे सार्वदेशिक आर्य वीर दल से जुड़ गये और अन्तिम समय तक इस संगठन के महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहे। श्री वेद प्रकाश जी ने सार्वदेशिक आर्य वीर दल के माध्यम से अनेकों शिविरों का आयोजन करके युवाओं के चारित्रिक एवं व्यक्तित्व निर्माण का विशेष कार्य किया। ऐसे ऊर्जावान एवं कर्मठ आर्य नेता का निधन आर्य समाज संगठन एवं आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री वेद प्रकाश जी के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

पर्वों का पुंज : मकर संक्रान्ति

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

हमारे आर्य पूर्वज इस विशाल ब्रह्माण्ड में समय-समय पर होने वाले परिवर्तन का सूक्ष्म-निरीक्षण करते थे। उस परिवर्तन झंझावतों से मानव जाति की रक्षा कर प्रकृति के विभिन्न तत्वों को अपने विकास में सहायक बनाने का प्रयास करते थे। वैदिक ऋचाओं के दृष्टा अपने अनुभवों को वैदिक ऋचाओं द्वारा प्रकट कर प्रकृति से सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न करते थे। वैदिक आर्यों ने सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि का गहराई से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। चूंकि ये सभी जड़ हैं, किन्तु परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं।

यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है-

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च स्वाहा।

- यजुर्वेद अ. 7 मन्त्र 42

इस सुन्दर और सरल मन्त्र में कहा गया है कि दिव्यगुण युक्त विद्वानों अथवा उपासकों का जीवन व बलरूप तथा अद्भुत रूप वाला वह परमेश्वर, सूर्य का, वायु का तथा अग्नि का मार्ग दर्शक है। यह द्यूलोक, पृथिवी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक को प्राप्त हो रहा है। चर अर्थात् प्राणी जगत का, अचर अर्थात् जड़ जगत का आत्मा वही सूर्य सबसे अभिसरणीय अर्थात् प्राप्त करने योग्य है। उसके प्रति हम सर्वस्व का समर्पण करते हैं। सूर्य से अधिकाधिक लाभ लेते हैं। इस प्रकार कारण स्वरूप परमात्मा से प्राप्त यह समस्त प्राकृतिक पदार्थ प्रकाशमान है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार जितने समय में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूर्ण करती है, उस अवधि को एक 'सौर वर्ष' कहते हैं। कुछ लम्बी मृदंग वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उस परिधि को 'क्रान्तिवृत्त' कहा जाता है। हमारे मनीषियों ने इस क्रांतिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिए हैं। जैसे 1 मेष, 2. वृषभ, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृष्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ, 12. मीन। प्रत्येक भाग अथवा आकृति को राशि कहते हैं। ये सभी राशियां अथवा आकृतियां जड़ हैं, इनका अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण (प्रवेश) करती है, तब उसे 'संक्रान्ति' कहा जाता है।

मध्ययुग अथवा पौराणिक युग (4 से 6 शताब्दी ई.) में कतिपय स्वार्थी, धन-लोलुप, 'संस्कृतज्ञ' विद्वानों ने सामाजिक-मानसिकता की कमजोरी का लाभ उठाकर इन नक्षत्रों, ग्रहों आदि छोटे-बड़े पुञ्जों के आधार पर फलित ज्योतिष की कुछ कल्पित बातें गढ़ ली। भृगु-संहिता आदि नाम पर, सुखद दुखद ग्रहों की गपोड़शंसी बातें समाज में प्रचारित कर दी। मुहूर्त चौघड़िया, मंगल, सूतक, पञ्चक आदि की तथ्यहीन तथा बुद्धि विवेक के विरुद्ध तथा तर्क पर न ठहरने वाली बातों का समाज में एक मानसिक भय उत्पन्न करने वाले विचारों का प्रचार कर दिया। जप पुरश्चरण, दान दक्षिणा जिसमें भूमि, द्रव्य सोना, चांदी, पलंग बिस्तर तथा गोदान का प्रचार कर दिया। अनिष्टकारी ग्रहों नक्षत्रों (जड़ पदार्थ) के प्रतिनिधि बनकर संकट ग्रस्त जातक के दुख दूर करने का पाखण्ड फैला दिया। वस्तुतः देखा जाए तो इस राष्ट्र की सभी प्रकार की हानि जितना इन फलित ज्योतिषियों ने की है, उतनी हानि बाहरी आक्रमणकारियों ने भी नहीं की है। फलित ज्योतिष विज्ञान तथा तर्क के आधार पर तथा बुद्धि और विवेक के सम्मुख कहीं नहीं ठहरता। दुर्भाग्य है कि समाचार पत्र-पत्रिकाएं तथा टी. वी. के विभिन्न चैनल जन-साधारण की इसी मानसिक कमजोरी का लाभ उठाकर आर्थिक और व्यापारिक अवसर ढूंढ़ने में लगे हैं। कम से कम पत्रकारिता के पवित्र क्षेत्र को फलित ज्योतिष की कालिमा से दूर रखना चाहिए।

प्रसंगवश, मकर संक्रान्ति की चर्चा चल रही है, अतएव इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि दक्षिणायन काल में रात्रियां दीर्घ कालीन और दिन छोटे होते हैं। सूर्य की मकर राशि (10वां क्रम) की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति (4 था क्रम) दक्षिणायन प्रारम्भ हो जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति का अत्यधिक महत्व है। मकर का सामान्य अर्थ मगर है। जिस प्रकार यूरोप के लोग 25 दिसम्बर को बड़ा दिन मानते हैं। हम भारतीय आर्यगण मकर संक्रान्ति को ही बड़ा दिन मानते हैं। साधारण जन की मान्यता है कि इसी दिन से ही तिल-तिल दिन बढ़ने लगता है। हमारा वर्षारम्भ आग्रहायण से होता है। चान्द्रमास के वर्ष के 10 दिन कम होने पर उसे 'लौंदमास' के द्वारा सौर मास के वर्षों में बराबर किया जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि ज्योतिष के ये सूक्ष्म सूत्र सर्वप्रथम आर्यों ने ही किए हैं। वैदिक साहित्य में ज्योतिष ज्योति शास्त्र को वेद पुरुष का नाम 'ज्योतिषं नैनं प्रोक्तम्' कहा गया है।

यजुर्वेद के अध्याय 30, मन्त्र 15 के अनुसार 60 संवत्सरों में 5-5 के 12 युग होते हैं। वर्णित प्रत्येक युग में क्रम से संवत्सर, परिवत्सर, इच्छावत्सर, अनुवत्सर और इद्वत्सर ये 5 संज्ञाएं हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि रोमन लोग 10 माह का वर्ष मानते थे। ज्यूलियस सीजर ने भारतीय ज्योतिष से प्रभावित होकर अपने वर्षों में परिवर्तन कर 10 माहों के स्थान पर 12 महीने किए। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि रोम निवासियों पर भारतीय ज्योतिष का बहुत प्रभाव था। ज्यूलियस सीजर ने जुलाई अपने नाम पर तथा 'अगस्त' अपने काका 'ऑगस्टस' के नामानुसार रख दिया।

मुसलमान आज भी चान्द्रमासों को मानकर पिछड़े हुए हैं। यदि ये भी हिन्दू ज्योतिष से मिलकर कार्य करें तो इनकी ईद के चांद की अनिश्चितता की कठिनाई दूर हो सकती है। किन्तु यह सब गुण ग्राहकता पर निर्भर करता है।

मकर संक्रान्ति पर्व कृषक प्रिय त्यौहार है। कहा जाता है कि तक्षशिला में खगोल शास्त्रीगण 'लोई' शब्द से भली-भांति परिचित थे इसका सम्बन्ध सीधे सूर्य से ही रखा गया है। लोई शब्द का सामान्य अर्थ 'गरमाहट' है। हमारे पंजाब-हरियाणा के कृषक को गर्मी अधिक प्रिय है। गर्मी (उष्णता) से फसल अच्छी और खूब पकती है। यही कारण है कि मकर सौर संक्रांति पर कृषक बहुत खुश होते हैं। मकर संक्रांति से सभी लोग अपना व्यापारादि प्रारम्भ करते हैं और मैदानों में आना जाना प्रारम्भ कर देते हैं। इस क्षेत्र में जिस व्यक्ति के यहां गत वर्ष कोई शुभ कार्य जैसे विवाह, सन्तानोत्पत्ति आदि हुआ हो, वह आज रात्रि को होली जलाता है। अपने सगे- सम्बन्धियों तथा इष्ट मित्रों में यह पर्व मनाकर मिठाई आदि वितरण करते हैं।

भारतीय दर्शन में उत्तरायण काल तथा मृत्यु का गजब सह-सम्बन्ध माना गया है। कहते हैं, उत्तरायणकाल में दिवंगत की आत्मा पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करती। किन्तु यह वैदिक सिद्धान्त नहीं है।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों में इस पर्व को अपनी मान्यता और श्रद्धा के अनुसार मनाते हैं। कहीं पोंगल (दक्षिण भारत) तथा माघ बीहू पूर्वोत्तर भारत (असम आदि) में मनाया जाता है। इन्हीं दिनों गंगा सागर (पं. बंगाल) में लाखों श्रद्धालु स्नान कर अपने को पुण्य भागी मानते हैं। पोंगल पर्व से तमिल का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। इसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। हमारे यहां धार्मिक मान्यता है कि 'सारे तीर्थ बारम्बार, गंगा सागर एक बार।' जहां तक माघ बीहू का सम्बन्ध है, असम में यह धान कटाई का पर्व होता है। यहां होली की तरह 'जी' जलाकर पूजन किया जाता है। असम वासियों में मान्यता है कि 'जी' जलाने (अग्नि) के साथ ही सारे पापों और बुराईयों का नाश हो जाता है। पोगल का अर्थ 'खीर' होता है। केरल के क्षेत्रों में भगवान 'अयप्पा' का प्रख्यात मन्दिर है और यह बड़ा भारी आराधना केन्द्र है। कहा जाता है कि इस दिन कुछ क्षणों के लिए मन्दिर के निकट पहाड़ियों में आग की लपटें उठती दिखाई पड़ती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इस शीत प्रधान अवसर पर तिल, तुलं च ताम्बल, तरुणीतृप्त भोजनम् हिमन्ते न सेवन्ते ते नरा मन्द भागिनम्। तिल, रूई, गुड़ तथा सफल गृहस्थ जीवन द्वारा इसका लाभ उठाना चाहिए।

- 'सुकिरण' अ/13, सुदामा नगर
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

हल्दी के लाभकारी गुण

– डॉ. विभा सिंह

हल्दी धार्मिक दृष्टि से पवित्र एवं शुभ मानी जाती है तथा प्रत्येक घर में सब्जियों में भी इसका प्रयोग होता है। इसके अनेक औषधीय गुण हैं जो हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। हल्दी स्वभाव में तिक्त, रूक्ष, कफ, पित्त, त्वचा के दोष, रक्तदोष, सूजन, मधुमेह एवं व्रण को दूर कर, राहत पहुँचाने वाली है। आयुर्वेद की अनेक औषधियों के निर्माण में हल्दी का प्रयोग होता है। आयुर्वेदिक तेल, घृत, आसव आरिष्टों एवं चूर्णों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है। पारद संहिता में हल्दी के कल्प का वर्णन किया गया है। हल्दी के प्रमुख औषधीय गुण इस प्रकार हैं :–

pkV o ?kko ij % यदि शरीर के किसी भी भाग में चोट लग गई हो और वहाँ सूजन आ गई हो, तो हल्दी पीसकर एवं उसमें चूना मिलाकर उस स्थान पर लेप करना चाहिए। यदि चोट भीतरी हो, तो गाय के गुनगुने दूध में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। ऐसा करने से दर्द कम हो जाता है और यदि घाव हो गया हो, तो इसका लेप लगाने से घाव के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। इस तरह यह कीट नाशक भी हैं। व्रण पर इसका चूर्ण रखने से घाव शीघ्र भर जाता है। यदि फोड़ा फूटा हुआ न हो, तो अलसी के पुल्टिस में हल्दी मिलाकर फोड़े पर बांधने से फोड़ा जल्दी पककर फूट जाता है एवं मवाद बाहर आ जाता है और घाव जल्दी ही ठीक हो जाता है।

,yth esa ykHkdkjh %& हल्दी का प्रयोग चर्म रोग, जुकाम एवं श्वास की एलर्जी में भी लाभदायक होता है।

[kkalh esa ykHkdkjh %& हल्दी व आमी हल्दी दो माशा, इन दोनों को पानी के साथ पीसकर मटर के दाने के बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह एवं शाम जल के साथ सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। यदि खांसी सूखी हो तो गर्म दूध में हल्दी का एक चम्मच चूर्ण मिलाकर पीने से कफ बाहर आ जाता है। सूखी खांसी में शहद के साथ भी हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। इनकी गोलियाँ बना लेनी चाहिए एवं जब खांसी आये तो मुंह में रखकर चूसना चाहिए, इससे खांसी का वेग कम हो जाता है।

u= jksx esa mi;ksxh %& आँख सम्बन्धी बीमारियों में हल्दी विशेष उपयोगी होती है। यदि आँख लाल हो गई हो तो आंखों पर हल्दी का लेप करने से लालिमा समाप्त हो जाती है। हल्दी को

महीन पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। रात को सोते वक्त सलाई से आंखों में लगाना चाहिए। ऐसा करने से आंख की ज्योति बढ़ती है।

mnj xSl esa ykHkdkjh %& यदि पेट में गैस बन रही हो तो पिसी हुई हल्दी 10 रत्ती एवं इतनी ही मात्रा में काला नमक मिलाकर गर्म जल के साथ सेवन करने से तत्काल लाभ पहुँचता है।

nkr jksx esa mi;ksxh %& यदि दाँत में दर्द होता हो या अन्य विकार हो, तो हल्दी का मंजन विशेष उपयोगी होता है। मंजन बनाने हेतु हल्दी की गांठ को धीमी आंच पर भूनना चाहिए और भूनकर इसे बारीक पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। इसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर शीशी में भर लें एवं प्रतिदिन प्रातः काल तथा सायं खाने से पूर्व इसका मंजन करना चाहिए।

d.k jksx esa mi;ksxh %& कान बहने, दर्द, पीव या मवाद होने पर हल्दी का प्रयोग विशेष लाभकारी होता है। कान की तकलीफ होने पर हल्दी को उसकी मात्रा में दोगुने पानी में महीन पीसकर छान लेना चाहिए। इसकी बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर धीमी आंच पर पकाना चाहिए। कान सम्बन्धी तकलीफ हो तो गुनगुना करके दो–तीन बूंदें कान में डालें।

eq[k lEcU/kh jksxksa esa Hkh ykHkdkjh %& मुख सम्बन्धी तकलीफ तथा हलक, तालू एवं मुंह में छाले पड़ जाने की स्थिति में या गले में गिल्टियाँ निकल आने की स्थिति में हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। मुंह में छाले होने पर एक तोला हल्दी को कूट–पीसकर एक लीटर पानी में उबालना चाहिए एवं सुबह–शाम कुल्ला करना चाहिए। ऐसा करने से मुख के अन्दर के छाले ठीक हो जाते हैं तथा जलन समाप्त हो जाती है।

यदि गले में गिल्टियाँ निकल आई हों तो हल्दी को महीन पीसकर छः माशा की मात्रा में सुबह जल के साथ सेवन करना चाहिए। साथ ही साथ हल्दी को पानी में पीसकर हल्का गर्म करके गले पर लेप करना भी लाभदायक होता है।

lkSan;Z izlk/ku %& सौंदर्य प्रसाधन के रूप में भी हल्दी का विशेष उपयोग किया जाता है। अनेक आयुर्वेदिक क्रीमों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है। विवाह से पूर्व लड़कियों एवं लड़कों को हल्दी लगाने का विधान है, जिसका मुख्य कारण यह है कि हल्दी का लेप लगाने से त्वचा कांतिमय हो जाती है एवं रंग गोरा हो जाता है। हल्दी के साथ–साथ चंदन का लेप लगाना सौंदर्य में अभिवृद्धि कर देता है। रात को सोते वक्त चेहरे पर हल्दी का लेप लगाना चाहिए एवं प्रातः काल उठकर हल्के गुनगुने पानी से धो डालना चाहिए। कुछ दिन नियमितरूप से करने पर चेहरा सुन्दर, सुकोमल हो जाता है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में 8 जनवरी, 2022 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक में

हरियाणा प्रान्त में आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों पर चर्चा

हरियाणा के पंचायत, ब्लॉक एवं जिला परिषद् के चुनावों में आर्य समाज के कार्यकर्ता अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायें – स्वामी आर्यवेश

देश में युवाओं को संस्कारित करने का अभियान होगा तेज – स्वामी आदित्यवेश

13 मार्च, 2022 को टिटौली में आयोजित होगा 'आर्य परिवार मिलन' समारोह

8 जनवरी, 2022 को आर्य समाज के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की एक बैठक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक, हरियाणा में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। बैठक यज्ञ के उपरांत प्रारम्भ हुई। हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व दिल्ली के अधिकारियों ने लिया भाग। बैठक में सरकार की शराब नीति की निंदा की और निर्णय लिया कि ग्राम स्तर पर शराब के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आने वाले समय में हरियाणा के ग्राम पंचायत, जिला पार्षद् व ब्लॉक समिति के चुनाव में आर्य समाज संगठन अपने प्रत्याशी उतारेगा। जहां पर आर्य समाज के प्रत्याशी नहीं होंगे वहाँ पर शराब के खिलाफ आवाज उठाने वाले प्रत्याशी को आर्य समाज अपना समर्थन करेगा। उन्होंने कहा कि आज युवाओं के निर्माण की योजना न तो किसी सरकार के पास है न किसी धार्मिक संगठन के पास है। इसलिए आर्य समाज वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवाओं को सही दिशा देने के लिए व उनमें राष्ट्रभक्ति व संस्कृति की रक्षा करने के लिये कार्य कर रहा है।

नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष, आर्य संन्यासी स्वामी रामवेश जी ने सभी अधिकारियों को युवा निर्माण अभियान व नशामुक्ति अभियान को पूरी ताकत से आगे बढ़ाने का संकल्प दिलवाया।

मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि अब युवा निर्माण अभियान को और अधिक ताकत के साथ तेज किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आगामी फरवरी माह में व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा तथा मई, जून व जुलाई माह में शिविरों के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा की नौजवान ही किसी देश की नींव होते है और नींव जितनी मजबूत होती है उस पर इमारत भी उतनी ही बुलंद बनती है। इसलिए युवाओं को बुराइयों से बचाना समाज की जिम्मेदारी है। इसलिए राजस्थान में भी इस मुहिम पर तीव्र गति से कार्य किया जाएगा।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि पूरे देश में लड़के व लड़कियों को संस्कारित करने का अभियान तेज गति से आगे बढ़ाया जायेगा। गाँव–गाँव में लड़के व लड़कियों के अलग–अलग पांच–पांच दिन के शिविर आयोजित किये जायेंगे। जिनके माध्यम से उनको प्राचीन वैदिक संस्कृति, राष्ट्रभक्ति व नैतिक शिक्षा से ओतप्रोत किया जायेगा।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम आर्या जी ने कहा कि आजकल समाज में डिप्रेशन की समस्या ने लोगों को घेर रखा है। उन्हें योग व आध्यत्मिक प्रशिक्षण देकर डिप्रेशन से बचाया जा सकता है। हम अपने शिविरों में अबकी बार इस बात पर भी गंभीरता से कार्य करेंगे।

इस बैठक में स्थानीय स्तर पर नशामुक्ति अभियान की समितियों का गठन, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में जन चेतना यात्राओं का आयोजन, जिला स्तरीय सम्मेलन तथा आर्य समाज सदस्यता अभियान, युवा निर्माण अभियान, 12 जून, 2022 को प्रांतीय युवा सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता तथा पर्यावरण शुद्धि महाअभियान के तहत घर–घर यज्ञ के कार्यक्रम आदि के आयोजन के निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए।

इस बैठक में प्रिंसिपल आज़ाद सिंह बांगड़, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष श्री रामनिवास, कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन राठी, श्री सहसरपाल मुजफ्फरनगर, श्री उत्तम आर्य दिल्ली, श्री ऋषिराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री हरपाल आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री अजीतपाल, श्री दलबीर आर्य, डॉ. विवेकानन्द, श्री जयवीर आर्य, डॉ. राजेश, डॉ. शीशराम, श्री जयपाल आदि ने अपने विचार रखे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।